पाठ 4

गुलाबजामुन

आइए सीखें –

- कहानी का हाव–भाव के साथ वाचन।
- विशेषण शब्दों की पहचान।
- भाववाचक संज्ञा बनाना।
- विस्मय बोधक चिह्न का प्रयोग।

रम्मू की प्रिय मिठाई है गुलाबजामुन। रस से भरे गुलाबजामुन रम्मू को बहुत अच्छे लगते हैं। रम्मू गुलाबजामुन का इतना शौकीन है कि गुलाबजामुन खाकर और रस पीकर वह पुरवे को जीभ से चाट डालता है। पुरवे में रस का इतना भी अंश नहीं रहता कि चींटियाँ भी लग सकें ।

रम्मू की बुआजी को भी गुलाबजामुन अच्छा लगता है । वे फूफाजी के साथ चौक घूमने गईं तो और सामान के साथ गुलाबजामुन भी लाईं। गुलाबजामुन लाकर उन्होंने रम्मू की माँ को दिए और बोलीं – ''भाभीजी, ये गुलाबजामुन हैं। बच्चों को दे दीजिए, और आप भी ले लीजिए। अम्मा जी को भी दे दीजिए। मैं अभी नहीं लूँगी, इच्छा नहीं है।''

रम्मू की माँ ने गुलाबजामुन ले लिए। गुलाबजामुन बहुत थे। रम्मू की माँ बोलीं– ''बहन जी, आप इतना सामान क्यों ले आती हैं?''

रम्मू की बुआजी मुस्कराकर बोलीं– ''बच्चों के लिए लाई हूँ और मुझको भी तो गुलाबजामुन बहुत अच्छे लगते हैं।''

रम्मू की माँ ने सबसे पहले गुलाब जामुन रम्मू की दादी को दिए। दादी ने पहले तो गुलाबजामुन नहीं लिए, पर जब अधिक आग्रह किया तो एक गुलाबजामुन ले लिया।

दादी के बाद एक–एक गुलाबजामुन बच्चों को दिया गया। बचे हुए गुलाबजामुन जो

काफी थे, रम्मू की माँ ने एक डिब्बे में रख दिए और डिब्बा चौके में बने टाँड पर रख दिया। टाँड पर अनेक डिब्बे थे– दो–दो किलो वाले, चार–चार किलो वाले। उन्हीं के बीच में उन्होंने गुलाबजामुन का डिब्बा भी रख दिया।

रम्मू ने माँ को डिब्बे में गुलाबजामुन डालते देखा। फिर वह खेलने बाहर चला गया।

इन्हें भी जानें–

पुरवा–कुल्हड़, टाँड़–ऊँचाई पर सामान रखने के लिए बनाया गया स्थान, शौकीन–रूचि रखने वाला, चौका–रसोई बनाने का स्थान।

अब बताइए–

1. रम्मू को कौन–सी मिठाई अधिक पसन्द थी?
2. तुम्हें कौन सी मिठाई पसन्द है?

शाम होने में अभी तीन घण्टे की देर थी। रम्मू की बुआ जी ने कहा– ''भाभीजी, चलिए ताऊजी के यहाँ हो आएँ। ताऊजी और ताईजी से दो साल से भेंट नहीं हुई है।''

''चलिए मैं भी दो महीने से उनके यहाँ नहीं गई। उनसे मिलने की मेरी भी बड़ी इच्छा है।'' रम्मू की माँ ने कहा।

इधर दोनों ताऊजी के यहाँ गईं और उधर रम्मू के मन की हो गई। बात यह थी कि रम्मू को केवल एक गुलाबजामुन मिला था। रम्मू चाहता था कि उसे कम से कम तीन–चार गुलाबजामुन मिलते, तब उसकी इच्छा पूरी होती। जब माँ और बुआजी ताईजी के यहाँ गईं तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि अब वह डिब्बे से दो–तीन गुलाबजामुन और निकालकर खा लेगा। उसका बड़ा भाई भी किसी मित्र के यहाँ गया था। पिताजी छह बजे के पहले दफ्तर से आने वाले नहीं थे। इस तरह वह घर में अकेला था।

जाते हुए माँ ने कहा– ''रम्मू, घर देखना। मैं बुआजी के साथ ताईजी के यहाँ जा रही

शिक्षण संकेत– ● पाठ में आए क्षेत्रीय शब्दों (बोली) के मानक शब्द बताएँ। ● पारिवारिक रिश्तों के नामों से परिचित कराएँ। ● दूसरी मिठाइयों के बारे में बताएँ।

हूँ। हमें ढाई–तीन घण्टे लगेंगे। तुम घर में ही रहना, कहीं मत जाना।''

''अच्छा माँ, आप जाइए। मैं घर में ही रहूँगा। कहीं नहीं जाऊँगा।'' रम्मू बोला। वह यही चाह रहा था कि ये लोग जल्दी से जल्दी जाएँ और वह चौके में जाकर गुलाबजामुन उड़ाए।

इन्हें भी जानें–

ताऊजी–पिताजी के बड़े भाई। ताईजी–ताऊजी की पत्नी। दफ्तर–कार्यालय। उड़ाए–खाए। (पाठ के सन्दर्भ में)

अब बताइए–

1. अपने आसपास बनने वाली मिठाइयों के नाम बताओ।
2. कौन सी मिठाई किस चीज से बनती है पता कीजिए।

रम्मू की माँ और बुआजी इधर गली में गईं और उधर रम्मू के मन की हो गई। वह अन्दर आया और उसने चौके का दरवाजा खोला।

चौके में टाँड पर उसने दृष्टि डाली बीस डिब्बे एक नाप के सजे हुए थे–एक के बाद एक, नए–नए। उसने पहला डिब्बा उठाया। वह बहुत हल्का लगा। फिर भी सोचा कि शायद इसी में गुलाबजामुन होंगे। डिब्बा खोल डाला। पर उस डिब्बे में मिर्च की बुकनी थी। खुलते ही उसको ऐसी धाँस लगी कि चार–पाँच छींकें एक साथ आ गईं। उसने डिब्बा बन्द करके वहीं रख दिया। रम्मू ने अब दूसरा डिब्बा उठाया किन्तु जब दूसरा डिब्बा खोला और जैसे ही उसमें हाथ डाला तो उसका हाथ मैदा से सन गया।

अब तीसरे डिब्बे की बारी थी। तीसरे डिब्बे में चीनी रखी थी। गुलाबजामुन इसमें भी नहीं मिले। रम्मू खीझ उठा। उसे बड़ा गुस्सा आया। डिब्बों में यदि कुछ अन्तर होता तो वह डिब्बे को पहले ही पहचान लेता और इतनी परेशानी नहीं होती। वह तीन डिब्बे खोल चुका था, पर गुलाबजामुन किसी डिब्बे में नहीं मिले।

रम्मू ने चौथा डिब्बा उठाकर खोला। उसमें मूँग की दाल थी। अब वह बहुत परेशान होने लगा। फिर उसने बड़ी आशा से पाँचवाँ डिब्बा खोला तो खीझ कर रह गया। उसमें खड़ी हल्दी की गाँठें रखी थीं।

रम्मू ने हार नहीं मानी, क्योंकि गुलाबजामुन किसी न किसी डिब्बे में ही थे। रम्मू को करीब आधा घण्टा डिब्बे खोलने में लग चुका था, उधर उसकी माँ और बुआजी वापस लौट आईं, क्योंकि ताईजी घर पर नहीं थीं। उनके घर के दरवाजे पर ताला लटक रहा था।

जब वे घर में घुसीं और चौके में पहुँचीं तो खीझा हुआ रम्मू सातवाँ डिब्बा खोल रहा था। उस डिब्बे पर उसे पूरा भरोसा था कि इसी में गुलाबजामुन होंगे। उसने तुरन्त अन्दर हाथ डाल दिया। इस डिब्बे में सरसों का तेल था। पूरा हाथ तेल में डूब गया। ज्यों ही डिब्बे में से हाथ निकाला कि रम्मू ने सामने माँ और बुआजी को खड़ा पाया।

हाथ तेल से तर था। जमीन पर तेल बह रहा था। बुआजी मुस्करा रहीं थीं और माँ गुस्से में थीं। रम्मू कुछ सोच नहीं पा रहा था कि क्या करे। आखिर गुस्से में भरी माँ बोलीं – ''चौकें में क्या कर रहे थे? तेल के डिब्बे में हाथ क्यों डाला?''

''मैं ..... मैं ..... मैं कुछ नहीं कर रहा था माँ..... डिब्बे में ..... डिब्बे में मेरा हाथ अपने आप चला गया।'' रम्मू डरते हुए बोला।

बुआजी रम्मू की बात सुनकर जोर से हँस पड़ीं। माँ को गुस्सा तो बहुत आ रहा था, पर फिर भी शान्त होकर उन्होंने कहा– ''सूखे कपड़े से हाथ पोंछो और फिर जाकर साबुन से हाथ धोओ।''

शाम को जब सब लोग इकट्ठा हुए तो बुआजी के कहने पर बच्चों को एक–एक गुलाबजामुन फिर दिया गया और उनके कहने पर रम्मू को दो गुलाबजामुन दिए गए। उसके भाई और बड़ी बहन ने कोई आपत्ति नहीं की किन्तु रम्मू को दो गुलाबजामुन पाकर भी मन में

संकोच और पश्चाताप था।

यदि बुआजी और माँ न आतीं तो रम्मू को तीन डिब्बे और खोलने पड़ते, तब गुलाबजामुन मिलते। उसकी माँ गुलाबजामुन दसवें डिब्बे में रख गई थीं।

इन्हें भी जानें

खीझ–चिड़चिड़ापन या झल्लाहट। आपत्ति–विरोध। पश्चाताप–पछतावा।

अब बताइए–

1. आप रम्मू की जगह होते तो क्या करते?
2. क्या आपने कभी कोई ऐसा काम किया है जिससे आपको पश्चाताप हुआ हों।

डॉ. श्री प्रसाद

डॉ. श्री प्रसाद बच्चों के कवि ही नहीं बाल साहित्य के समीक्षक है इनका जन्म 1932 (उन्नीस सौ बत्तीस) में आगरा के पारना ग्राम में हुआ था। बच्चों के लिये उनकी कविताए 'मेरा साथी घोड़ा', 'चिडियाघर की सैर', 'ताक धिना धिन', 'झिलमिल तारे', 'फूलो का गीत' कविता संग्रह लिखे है।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रम्मू की माँ ने सबसे पहले गुलाबजामुन किसे दिया?

(ख) ताई जी के घर जाते समय माँ ने रम्मू से क्या कहा?

(ग) रम्मू चौके में क्या ढूँढ रहा था?

(घ) रम्मू की माँ और बुआ घर जल्दी वापस क्यों आ गईं?

(ङ) रम्मू के मन में पश्चाताप क्यों था?

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द छाँटकर खाली स्थान में भरिए–

(क) रम्मू की बुआजी ——————— से मिलने गईं। (ताऊजी, चाचाजी)

(ख) रम्मू की माँ ने गुलाबजामुन का डिब्बा ——————— पर रख दिया। (टाँड,छत)

(ग) बुआजी और माँ न आतीं तो रम्मू को ——— डिब्बे और खोलने पड़ते। (दो, तीन)

(घ) दो गुलाबजामुन पाकर भी रम्मू के मन में ——————— था। (हर्ष, संकोच)

3. उदाहरण के अनुसार नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए–

डिब्बों का क्रम	वस्तु का नाम	रम्मू को क्या हुआ
उदाहरण–पहला	मिर्ची की बुकनी	धाँस लगना
दूसरा		
तीसरा		
चौथा		
पाँचवाँ		
छठवाँ		
सातवाँ		

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए–

(क) हट्टा, कट्टा, पट्टा, खट्टा, ठट्ठा, गट्ठा,

(ख) गुस्सा, रस्सा, लस्सी, रस्सी

(ग) धक्का, कच्चा, सच्चा, छक्का, चम्मच, रम्मू

(घ) डिब्बा, नब्बे, मुरब्बा

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए–

(क) दुकानदार के यहाँ रस भरी जलेबियाँ हैं। ———————

(ख) मीठा पान अच्छा लगता है। ———————

(ग) मेले में हजारों व्यक्ति थे। ————————

(घ) अनु बहुत नटखट है। ————————

3. सही जोड़ी बनाइए—

गुण	धार्मिक
हठ	गुणी
झगड़ा	मूल्यवान
फुर्ती	झगड़ालू
धर्म	फुर्तीला
मूल्य	हठी

4. यहाँ शेर और चूहा कहानी के अंश दिए गए हैं। उनमें रिक्त भाग की पूर्ति करके, कहानी पूरी कीजिए—

किसी जंगल ——————— शेर ——————— था

वहीं पास के एक —————————— में चूहा ———————————— था

एक दिन —————————— सो रहा था।

चूहा ———————————— ऊपर कूदने ———————————।

शेर नींद से ——————————— ।

उसने चूहे को ————————————।

चूहा गिड़गिडाने ————————————।

उसने कहा मुझे ————————————————।

मैं किसी दिन आपके ———————————————— ।

———————————— ने उसे छोड़ दिया।

एक दिन —————————— जाल में ———————————— गया।

शेर दहाड़ने ————————— । चूहे ने उसकी ———————————— सुनी।

उसने अपने नुकीले ———————— से जाल ———————— दिया।

———————— ने चूहे को ———————— दिया।

5. दिए गए शब्दों में 'पन' जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

उदाहरण लड़का + पन = लड़कपन

अपना	————————
भोला	————————
बालक	————————
पराया	————————

6. कोष्ठक में दिए गए विस्मय बोधक शब्दों को नीचे लिखे वाक्यों में जोड़कर लिखिए–

(अहा, बाप–रे–बाप, अरे, हाय)

(क) .....! कितने मीठे गुलाबजामुन हैं।

(ख) .....! आप आ गए।

(ग) .....! कितनी सर्दी है।

(घ) .....! अब मैं क्या करूँ?

योग्यता विस्तार

- इस कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- अपनी पसन्द की मिठाइयों की सूची बनाइए।